

(ख) श्री बृज सरकार जन्म स्तुति (६७)

प्रगटी श्रीराधा रूप अगाधा सब सुख साधा नावै ।
पोषित जन साधा मेटति बाधा लखि रति कोटि लजावै ॥
आज भयो मंगल बृज के घर घर सब मिल मंगल गावै
गोपी गोप भाग्य कीरति की नव सम्पति प्रगटावै
सुर नर मुनि हर्षे सुमनहि वर्षे चढ़े विमाननि आवै
प्रमुदित मिलि गावें अति सुख पावें बाजे विविध बजावैं
नारद सनिकादिक शिव ब्रह्मादिक भृगु आदिक मुनि जेता
इन्द्रादिक जे जहां सुनि के वहां आए स्वजन समेता
सब मिल कर जोड़े करत निहोरे जय जय भानु दुलारी
जै कीरति कुमारी जै हरि प्यारी जय जय सुख दातरी
हे नित्य किशोरी प्रिय चित चोरी यह विनती सुनि लीजे
बृज वासिनि दीजे यश रस पीजे चरण शरण गहि लीजे
कर जोरि मनावै यह वर पावै दम्पति यश नितु गाऊं
पद कमल सुतोरा मधुप सुमोरा मन नित तहां वसाऊं
ऐहि भांति सकल सुर स्तुति करि करि निज निज धाम सिधाए
मिल आए बृजवासी सब सुख रासी चरणनि प्रेम बढ़ावै
कोई गुण गावै मंगल मनावै कोई दही ले धावै
आवहि बरसाने सुख सरसाने जै जै कार मनावै
नंद राय आए भानु राय मनाए हर्षि मिले गलि लाए
जै मिठी स्वामिनि श्यामल भामिनि घर घर मंगल वधाए

कुंज विहारिण लाडली कुंज विहारी हेत
बरसाने में प्रगट भई श्री वृष भानु निकेत ॥
यह लीला अति रस मई गावै जो चित लाय ।
बृज स्वामिनि कृपा मिले मन मंह प्रेम द्रढाइ ॥